स्नातकोत्तर हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर

पंचम पत्र

खड़ी बोली हिन्दी गद्य का विकास : फोर्ट विलियम कॉलेज और ईस्ट इंडिया की भाषा–नीति

प्रस्तोताः
डॉ. रमेश प्रसाद गुप्ता
सह–प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
रामदयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

खड़ी बोली हिन्दी गद्य के विकास में कई कारक एक साथ काम कर रहे थे, जिसमें अंग्रेजों द्वारा प्रशासनिक सुविधा–व्यवस्था के लिए भाषा एवं शिक्षण–संस्थान की स्थापना एवं ईसाई मिशनरियों आदि द्वारा धर्म–प्रचारार्थ खड़ी बोली आदि देसी भाषाओं में लेखन एवं अनुवाद–कार्य महत्त्वपूर्ण थे। हालांकि इससे खड़ी बोली हिन्दी गद्य के विकास की दिशा में कतिपय कार्य तो हुए, परन्तु परस्पर भाषा–भेद भी खड़े किये गए, जो विकास को उस तरह गति प्रदान नहीं कर पाए, जितनी कि होनी चाहिए थी।

अपनी प्रशासनिक–व्यवस्था संचालन के निमित अंग्रेजों ने एक व्यवस्थित–तंत्र विकसित करने के लिए 1800 ई. में कलकत्ते में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना की, जिसमें साहित्य एवं विज्ञान दोनों की शिक्षा की व्यवस्था की गई। इसी कॉलेज में देशी भाषाओं यथा; हिन्दुस्तानी भाषा, बंगला, तेलगु, मराठी, तमिल, कन्नड़ आदि में पुस्तकों के लिखे जाने की व्यवस्था प्रारंभ हुई। 1800 ई. में ही गिलक्राइस्ट हिन्दुस्तानी के प्राध्यापक नियुक्त हुए। हिन्दुस्तानी से उनका अभिप्रेत अरबी–फारसी शब्दावली से भरी हुई भाषा से था। गिलक्राइस्ट ने हिन्दी से अलग हिन्दवी के भाषा–मुंशियों को नियुक्त किया। फोर्ट विलियम कॉलेज में भाखा–मुंशी के रूप में एवं लल्लूलाल (1763 ई. 1830 ई.) एवं सदल मिश्र (1768 ई. – 1848 ई.) नियुक्त हुए, जिन्होंने क्रमशः 'प्रेमसागर' एवं 'नासिकेतोपख्यान' पाठ्य पुस्तकें लिखीं।

1824 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज में कैप्टेन विलियम प्राइस हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष हुए तो उन्होंने गिलक्राइस्ट की भाषा–नीति को एक तरह से बदल दिया। उन्होंने उर्दू के स्थान पर हिन्दी को प्रधानता दी और हिन्दी को हिन्दवी के अर्थ में प्रयुक्त किया। ईसाई मिशनरियों को भी गिलक्राइस्ट की भाषा–नीति मान्य नहीं रही। उन्होंने भी देश में प्रचलित हो रही खड़ी बोली हिन्दी को अपनाया। उन्होंने हिन्दुस्तानी (उर्दू) और भाखा (हिन्दी) में पुस्तक–निर्माण की अलग–अलग

व्यवस्था करवाई। फोर्ट विलियम कॉलेज के भाषा–मुंशियों द्वारा लिखी पुस्तकों ने खड़ी बोली हिन्दी गद्य के स्वरूप–विकास में अपना कुछ–न–कुछ योग जरूर दिया ही। भाखा–मुंशी लल्लूलाल ने वैसे कई पुस्तकों की रचनाएँ की, परन्तु खड़ी बोली गद्य की दृष्टि से उनकी पाँच पुस्तकें यथाः, सिंहासनबतीसी, बैताल पचीसी, माधोनल, शकुन्तला एवं प्रेमसागर विचारणी हैं। जिनमें पहली चार पुस्तकों को स्वयं लेखक लल्लूलाल जी ने रेख्ते की बोली कहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में 'उनकी भाषा उर्दू है।'

हिन्दी गद्य के विकास की दृष्टि से लल्लूलाल के प्रेमसागर का विशेष उल्लेख होता है, जो हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता से 1825 में पूर्णतः प्रकाशित हुआ। इसकी रचना का उद्देश्य हिन्दवी (खड़ी बोली) से परिचित कराना बताया जाता है। इसमें यामिनी भाषा को लल्लूलाल ने छोड़ने का प्रयास किया है, परन्तु उसने उन्हें पूर्णतः नहीं छोड़ा है। डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार ''खड़ी बोली गद्य की दृष्टि से प्रेमसागर का कोई खास महत्व नहीं है। इसकी ब्रजभाषा रंजित वृतगन्धी गद्य न ईंसा की खड़ी बोली की तरह साफ–सुथरा है और न बैताल पचीसी और सिहासनबतीसी की तरह खरा। ....स्पष्ट है कि प्रेमसागर केवल ब्रजभाषा रंजित ही नहीं है। इसमें शब्दरूपों की अनिश्चितता भी दिखाई देती है। शैली पर पंडिताऊपन की गहरी छाप है।'' (आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास)

फोर्ट विलियम कॉलेज के दूसरे भाखा मुंशी सदल मिश्र की 'नासिकेतोपख्यान' को वह प्रतिष्ठा नहीं मिली, जो 'प्रेमसागर' को मिली। उसे कॉलेज पाठ्यक्रम में कदाचित इसलिए नहीं रखा गया कि इसकी भाषा हिन्दुस्तानी के मेल में नहीं थी। लेखक सदल मिश्र ने इसे सीधे संस्कृत से अनुवाद किया था, स्वाभाविक है उसकी भाषा में संस्कृत की प्रचुर शब्दावली और संस्कृत के वाक्य–विन्यासों का भी प्रभाव इसकी भाषा–विन्यास पर था। पर उसकी भाषा पर ब्रजी और भोजपुरी दोनों का रंग है। इन असंगतियों के बावजूद सदल मिश्र की भाषा हिन्दी की अपनी प्रकृति के मेल की दिखती है।

फोर्ट विलियम कॉलेज ने खड़ी बोली हिन्दी गद्य के स्वरूप–निर्माण एवं विकास में अपनी दृष्टि एवं सीमा के बावजूद अपनी एक प्रारंभिक भूमिका निभाई है। उसने पाठ्यपुस्तकों की परम्परा की शुरूआत कर भाषा–स्वरूप निर्माण का कार्य किया। लल्लूलाल का प्रेमसागर, सदल मिश्र के 'रामचरित' एवं नासिकेतोपख्यान पाठ्य पुस्तकें ही थी। इन पाठ्य–पुस्तकों की भाषा मिशनरियों के धर्मग्रंथ के अनुवाद की भाषा की अपेक्षा साफ–सुथरी जरूर है। हालांकि ये ब्रजी के स्पर्श से सर्वथा मुक्त नहीं, किन्तु पाठ्य–पुस्तकों के लिए नई शब्दावली की खोज एवं नये विषयों के अनुरूप शब्दों

की तलाश का कार्य महत्वपूर्ण था। इसलिए खड़ी बोली हिन्दी गद्य के विकास में इसके द्वारा तैयार पाठ्य पुस्तकों/कृतियों का एक महत्वपूर्ण योग तो है ही।

ईस्ट इंडिया की भाषा–नीति

जहाँ तक ईस्ट इंडिया की भाषा–नीति का सवाल है, वह भेदभाव एवं विभाजनकारी थी। 1935 ई. में कम्पनी सरकार ने अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार का प्रस्ताव स्वीकृत किया। परन्तु 1836 ई. में अदालती भाषा के सम्बन्ध में जो इश्तहारनामा जारी किया; उसमें अदालतों में देशी भाषा के प्रयोग का निदेश दिया; क्योंकि अभी तक हिन्दी प्रदेशों की अदालती भाषा फारसी ही थी, जिसे जनता की सुविधा एवं अंग्रेजी शासन को सुदृढ़ करने की दृष्टि से अदालतों की भाषा देशी भाषा कर दी गयी। जिसका सम्प्रदायवादियों ने घोर विरोध किया। जिसकी नींव जॉन गिलक्राइस्ट ने फोर्ट विलियम कॉलेज में ही डाल दी थी– हिन्दी एवं उर्दू को शुरू में अलग–अलग करके। इश्तहार के वर्ष उपरांत 1837 ई. में हिन्दी के स्थान पर अदालतों की भाषा उर्दू घोषित कर दी गयी। यह स्पष्ट संकेतित है कि कम्पनी का प्रशासक वर्ग चतुरता से नई अदालती भाषा के आधार पर हमारी एकता पर गहरा चोट किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि ''गार्सां द तासी ने भी फ्रांस में बैठे–बैठे इस झगड़े में योग दिया।'' कम्पनी के अंग्रेजों द्वारा सम्प्रदायवादियों के शह पर हिन्दी उर्दू का कृत्रिम झगड़ा खड़ा कर हमारी भाषाई एकता एवं विकास को खंडित किया गया। कम्पनी की भाषा–नीति कभी देश–भाषा के हित में न रहकर, उनके शासन–संचालन के हित में साधक रही।

इसके बावजूद हमारी जनभाषा सरकारी एवं प्रशासनिक तंत्र की उपेक्षा एवं अवहेलना के बाद भी अपना विकास सतत जारी रखी और धीरे–धीरे उसने अपनी आंतरिक शक्ति अर्जित कर अपने को सर्वत्र स्वीकृत एवं प्रतिष्ठित करा लिया।

♣♣♣♣♣

(आधार ग्रंथः डॉ. बच्चन सिंह रचित 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास')